S. S. College, Jehanabad.
B. A. Part-II Subject-Psychology (Subsidiary)
Teacher — A. K. Sinha. Date 07.04.2021
असामान्य मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास Page-5
पृष्ठ -4 का शेष

(2) मध्य युग (Middle Age) — इस युग का आरम्भ असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में अंधकार युग यानि 500 A.D के बाद हुआ। यह युग 500 A.D से 1500 AD तक असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपना प्रभाव कायम रखा। इस युग में भी पुनः पुरानी विचारधारा को अपना लिया गया। यानि असामान्य व्यवहार या मानसिक रोग के लिए दुष्ट आत्मा का शरीर में प्रवेश करना या अलौकिक शक्ति तथा अपदूत का वास करना माना जाने लगा। एक यह रहा कि इस युग में असामान्य व्यवहार की एक नई प्रवृत्ति देखी गई और यह सामूहिक पागलपन (Mass Madness) की प्रवृत्ति थी। जैसे यदि एक व्यक्ति में Hysteria के लक्षण पाये जाते थे तो यह देखते ही देखते अन्य लोग भी उसे अपनाने लग जाते थे जिससे यह एक भयंकर महामारी का रूप ले लेता था। उस समय यह महामारी पूरे यूरोप में फैल गया था। इसमें लोग अपने घरों से निकल कर अपने समान असामान्य व्यवहार करने वालों के साथ मिलकर उछल-कूदने, रोने हँसने तथा एक दूसरे का कपड़ा तक फाड़ देना प्रारम्भ कर देते थे। इटली में तो इसी तरह के उन्मादी एक साथ मिल कर नाचने गाने लग जाते थे जिसे नृत्योन्माद (Tarantism) की संज्ञा दी गई। इसी समय एक दूसरी मानसिक बिमारी भी फैल गई जिसमें मानसिक रोगी अपने को भेड़िया सोच लेता था और उसी की तरह व्यवहार करने लगता था जिसे "वृकोन्माद" (Lycanthrop) की संज्ञा दी गई। इसी अवधि में सम्पूर्ण यूरोप में एक भयंकर मानसिक बीमारी फैली जिसे Black Death के नाम से जाना जाता था उस बीमारी से यूरोप के करोड़ों लोग को जान गवाना पड़ा।

चूंकि उस युग में पूरे यूरोप में पादरियों (clergymen) का बोल-बाला था इसलिए मानसिक रोगियों

तथा असामान्य व्यवहार वालों का चिकित्सक का काम भी यही करते थे। इनकी भी यही अवधारणा थी कि ऐसे मानसिक रोगियों में दुष्ट आत्मा, भूत-प्रेत, जादू-टोना या अलौकिक शक्ति (अपदूत) का वास है और इनके उपचार के लिए पवित्र जल से स्नान करा कर चर्च में प्रार्थना करवाया जाता था। 15वीं शताब्दी के अन्त होते-होते तो ऐसे मानसिक रोगियों को जादूगरनी या डाइन (witches) समझा जाने लगा जिससे बचने या बचाने के लिए पुजारियों ने एक मैन्युअल तैयार किया जिसे The witches hammer की संज्ञा दी गई। इसमें शारीरिक दंड पीड़ा देने (कोड़ा लगवाना) से लेकर आर्थिक दण्ड देने का प्रावधान किया गया था। इस प्रकार यह युग भी अंधविश्वासों से अपने को बचाने में सबका असमर्थ प्रतीत होता है।

4. मानवीय दृष्टिकोण :— यह दृष्टिकोण 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही अपना प्रभाव डालने लगा। इस विचारधारा के अनुसार अध्यात्मिक अंधविश्वास जो कि पादरियों, पुजारियों, पंडितों तथा मुल्लाओं की देन थी के विरुद्ध चिकित्साविज्ञान के लोगों द्वारा आवाज उठने लगी। इन लोगों ने असामान्य व्यवहारों तथा मानसिक रोगों के लिए दुष्ट आत्मा या दैविक प्रकोप को कारण नहीं माना और बताया कि शारीरिक बीमारी की तरह ही यह एक बीमारी है और इसका उपचार भी मानवीयता की तरह ही करना चाहिए। इस विचारधारा का प्रारम्भ औपचारिक रूप से निर्दोष चिकित्सक Juan Leuis Vives द्वारा की गई परन्तु Paracelsus नामक एक प्रमुख चिकित्सक द्वारा

असामान्यता के प्रति अधार्मिक तथा अंधविश्वास के विचारधारा के विरुद्ध पुरजोर आवाज उठाया गया और इसे सामान्य शारीरिक बीमारी की तरह ही मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर चिकित्सा करने पर बल दिया। इसी क्रम में जर्मनी के एक प्रख्यात चिकित्सक Johann Weyer ने कैदियों के रूप में मानसिक रोगियों की दशा देख कर उनके प्रति की जाने वाली अमानवीय व्यवहारों के प्रति विरोध जताए और एक पुस्तक प्रकाशित किया जिसका नाम था 'The Deception of Demons'। इस पुस्तक में यह उल्लेख किया कि मानसिक रोगी दुरात्मा के प्रभाव परिणाम नहीं होते बल्कि मानसिक या शारीरिक रूप से बीमार होते हैं। बुद्धिजीवियों द्वारा इस मत का स्वागत तो किया गया परन्तु Church के पादरियों द्वारा इनके मत का हँसी उड़ाया गया तथा इनके पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाया गया। इस प्रकार 20वीं सदी के प्रारम्भ तक उक्त विचार अधिक प्रभावशाली नहीं बन पाया। इसी प्रकार Reginald Scott द्वारा 1584 ई० में प्रकाशित पुस्तक 'Discovery of Witchcraft' पर भी इंग्लैंड के राजा James-I द्वारा प्रतिबन्ध लगाया गया। इस पुस्तक में भी पैशाचिक विचार के विरुद्ध आवाज उठाई गई थी। इसके अतिरिक्त St. Vincent de Paul ने भी घोर विरोध करते हुए असामान्य व्यवहार तथा मानसिक रोगी को मानवीय आधार अपनाते हुए सामान्य शारीरिक बीमारियों की तरह ही इनके उपचार पर बल दिया। परिणाम स्वरूप मानसिक रोगियों को अलग जगह न रख कर अच्छे अस्पतालों में रखने की व्यवस्था होने लगी। सर्वप्रथम (Henry-VIII) हेनरी-VIII ने 1547 में लंदन के St. Mary of Bethlehem को मानसिक अस्पताल में बदल दिया। इसी प्रकार 1566 में अमेरिका के मैक्सिको में The San Hippolito, 1641 में फ्रांस में La-maison de Charenton

तथा रूस में 1764 में मानसिक आरोग्यशालाओं की स्थापना की गई। परन्तु इन सभी आरोग्यशालाओं में मानसिक रोगियों के प्रति मानवीय व्यवहार न के बराबर होता रहा। मानवता वादी दृष्टिकोण का सही प्रयोग मानसिक रोगियों के प्रति एक French Physician, Phillipe Pinel द्वारा किया गया जिन्हें आधुनिक मनोरोगविज्ञान का जनक कहा जाता है। इन्हें बाद में पेरिस के मानसिक अस्पताल 'La Bicetre' का प्रभारी बना दिया गया। इसी समय इंग्लैण्ड में William T[illegible]k द्वारा मानसिक रोगियों के उपचार के लिए एक अस्पताल खोला जिसका नाम था 'York Retreat'। यह मानवीय दृष्टिकोण के आधार 1800 AD तक चला तथा बाद में इसी आधार को संशोधित तथा परिष्कृत किया गया।

5. आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान का उद्भव! —— यों तो Pinel तथा Tuke के मानवीय उपचार की विधियां असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में पूरे संसार एक हल-चल उत्पन्न कर दिया था। परन्तु अमेरिका में इसकी अभिव्यक्ति Benjamin Rush के कार्यों द्वारा हुई। इन्होंने 1783 में Pennsylvania Hospital में कार्य प्रारम्भ किया और 1796 ई० में मानसिक रोगियों के मानवीय उपचार के लिए एक अलग ward तैयार करवाये। 1812 ई० में इन्होंने मनोरोगविज्ञान पर पहली पुस्तक प्रकाशित किया जिसमें मानसिक रोगियों के उपचार को आधुनिक तथा उन्नत बनाने पर बल दिया।

शेष पृष्ठ — 9 पर